ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 454-456
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत एकल एवं संयुक्त परिवार की महिला शिक्षिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन

अर्चना श्रीवास्तव

शोध अध्येत्री – शिक्षा शास्त्र विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज्जफरपुर (बिहार), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: archanasri2610@gmail-com

सारांश : ***शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा सभ्य नागरिक का निर्माण किया जा सकता है और एक सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति ही अपने समाज की समस्याओं को समझकर उन्हें दूर कर सकता है, क्योंकि सम्पूर्ण समाज का कल्याण ही एक राष्ट्र का निमार्ण है।***

शिक्षा मनुष्य को व्यवस्थित जीवन यापन के लिए तैयार करते हुए विकासोन्मुखी भविष्य की ओर से जाकर विषम परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति प्रदान करती है। यह स्वानुशासन का पाठ पढ़ाकर व्यक्ति के अंतः तथा बाहय स्वरुप को सुदृढ करती है। अतः शिक्षा मानस के लिए सर्वांगिण विकास का प्रवेश द्वार है।

कुंजीभूत शब्द– संस्कृत, सम्पूर्ण समाज, जीवन यापन, विकासोन्मुखी, सामंजस्य, स्वानुशासन, सर्वांगीण विकास।

आज सभी क्षेत्रों में से महिलाओं के लिए शिक्षिका का पद सबसे आदरणीय एवं लोकप्रिय माना जाता है। महिला शिक्षिका ही बालकों को प्रेरित करते हुए मार्गदर्शन देते हुए उनकी क्षमता का परीक्षण द्वारा सही मूल्यांकन करती है, जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है। इसलिए अब शिक्षा के क्षेत्र में महिला शिक्षिका का स्थान पुरुष शिक्षक की अपेक्षा सर्वोत्तम माना जाता है ।

महिला शिक्षिकाओं के परिवार में सामंजस्य होना जरूरी है । अगर महिला शिक्षिका अपने परिवार तथा अपने कार्य क्षेत्र में पूर्णरुप से तालमेल बिठा लेती है, तो वह अपने परिवार तथा कार्यक्षेत्र में पूर्ण रूप से सामंजस्य स्थापित कर लेती है। जब महिलायें गृह कार्य के साथ–साथ कार्य करने के लिए नौकरी करने जाती है, तो स्वाभाविक है, उन्हें परिवारिक एवं संस्थागत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संस्थान द्वारा शिक्षिकाओं की फिस हर तरफ सुविधायें प्रदान की जाती है, जिससे की वह स्थिति से सामंजस्य कर पाती है। कार्य कीत दशाओं में केवल उस कार्यक्षेत्र की सुविधायें नहीं बल्कि उसके कार्य क्षेत्र के बाहर की सुविधाओं जैसे– आवास, चिकित्सा, शिक्षा, यातायात की संस्थागत द्वारा किस तरह की व्यवस्था की गयी है, जिससे परिवार के सदस्यों का भी सहयोग मिलता रहे। इस पर उनका पारिवारिक समायोजन निर्भर करता है।

अध्ययन की आवश्यकता – समायोजन का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, समायोजन हर किसी के लिए आवश्यक है और यदि हमारे जीवन में समायोजन न हो तो हमें जान – अनजाने ही अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और यदि समायोजन कामकाजी महिलाओं को स्थापित करना हो, तो और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि एक कामकाजी महिला को बहुत ज्यादा समायोजन करना पड़ता है ।

इसलिए शोधकर्ती को चिंतन करने के लिए इस समस्या पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई। "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत एवं संयुक्त परिवार की महिला शिक्षिकाओं के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन का महत्व – प्रस्तुत अध्ययन का महत्व निम्न दृष्टि से दर्शाया गया है ।

1. महिला शिक्षिकाओं के साथ आने वाली समस्यायें स्पष्ट होने से समायोजन स्थापित करने में सफलता मिलेगी।
2. महिला शिक्षिकाओं के साथ अपने वाली समस्याये स्पष्ट होने से शिक्षिकाओं की आत्म विश्वास में वृद्धि होगी।
3. यह लघु उद्योग द्वारा पूरा होन के पश्चात् लोगों के मन में महिलाओं के प्रति और अधिक सम्मान की भावना जागृत होगी।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

1. मजूमदार (1973) इन्होंने किशोरावस्था में समायोजन की समस्या पर एक अध्ययन किया और पाया कि सामाजिक वातावरण किशोरों के व्यवहार में कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं करता। छात्र एवं अभिभावकों के बीच सम्बन्ध पर से अभिभावकों की भूमिका पर प्रत्यक्षीकृत होता है, कुसमायोजित परिवार का वातावरण असंतुलित होता है।
2. फातिमा एन (1975) इन्होनें अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मुस्लिम महिलाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन किया।
3. सास्वत (1992) दिल्ली के माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों का परिवारिक समायोजन मूल्य उपलब्धि सामाजिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

एवं आर्थिक स्तर पर अध्ययन किया इससे पुरुष शिक्षकों के आत्म विचार का सामाजिक समायोजन के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया जबकि महिला शिक्षिकाओं के आत्म–विचार धनात्मक व सार्थक स्तर पर स्वास्थय सामाजिक, भावात्मक सम्बन्धों के समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया ।

4. देवी (1998) आगरा विश्वविद्यालय के अध्यापकों की शिक्षा कार्यबुक पर एक अध्ययन किया और इस अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक समायोजन एवं स्वास्थ्य समायोजन का सार्थक सम्बन्ध सौन्दर्यभूमि मूल्य के साथ होता है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षकों का समायोजन सम्बन्ध उनके मूल्यो से होता है ।

शोध कथन– " शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत एकल एवं संयुक्त परिवार की महिला शिक्षिकाओं के परिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन । "

संक्रियात्मक परिभाषा :

1. शासकीय – "सरकारी अथवा जो शासन के राज – काज से सम्बन्धित हो उसे शासकीय कहते है ।"

2. अशासकीय – "गैर सरकारी अथवा जो शासन के राज – काज से सम्बन्धित न हो उसे अशासकीय कहते है ।

3. एकल परिवार – "एकल परिवार का अर्थ ऐसे परिवार से है जिसमें परिवार के सदस्यों की संख्या कम होती है और इसमें केवल माता – पिता और बच्चे सम्मिलित होते है, सपरिवार का स्वरूप आकार में छात्रो का होता है।"

4. संयुक्त परिवार– "संयुक्त परिवार का अर्थ ऐसे परिवार से है, जिसमें परिवार की सदस्यों की संख्या अधिक होती है और वो पूर्णरूप से अपने निर्णय लेने के लिए अपने परिवार के मुखिया के ऊपर निर्भर रहते है। इस परिवार में दादा–दादी, ताया–तायी, चाचा–चाची, तथा बच्चे आई सम्मिलित होते है, संयुक्त परिवार का स्वरूप आकार में बड़ा होता है।"

समायोजन– "समायोजन का तात्पर्य व्यक्तियों को अपनी आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के साथ सन्तुलन बनाये रखना है व्यक्ति की इच्छाओं संवेग, व्यवहार व आचरण एक दूसरे के अनुकुल हो व्यक्ति एवं वातावरण के मध्य प्रभावपूर्ण संतुलन की प्रक्रिया ही समायोजन कहलाती है।"

अध्ययन के उद्देश्य–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त एवं एकल परिवार की महिला शिक्षिकाओं में पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
3. अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त एवं एकल परिवार की महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त परिवार की महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया ।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत एकल परिवार की महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पना– इस शोध कार्य के लिए निराकरणीय परिकल्पना का उपयोग किया जायेगा इसके अन्तर्गत विभिन्न परिकल्पनायें निम्नवत् है –

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
2. शासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त एवं एकल परिवार की महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
3. अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त एवं एकल महिला शिक्षिकाओं में परिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत संयुक्त परिवार की महिला शिक्षिकाओं में पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत एकल परिवार की महिला शिक्षिकाओं में पारिवारिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।

शोध प्रविधिः

1. न्यादर्श का चयन– प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के जनपद बलिया में स्थित 5 शासकीय एवं 5 अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं के एकल एवं संयुक्त परिवार के पारिवारिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन तक ही समिति है ।

2. शोध उपकरण–

निष्कर्ष – झमहिलाओं की आर्थिक स्थिति शिक्षण दोनो ही परिववारिक समायोजन से निश्चित रूप से जुड़ी होती है। इनके अनुसार अधिक धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को कम धार्मिक प्रकृति वाले व्यक्ति का वैवाहिक जीवन अधिक सुखमय होता है।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देवी (1998), "आगरा विश्वविद्यालय के अध्यापकों को शिक्षा का अध्ययन "(अप्रकाशित) रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर।
2. शर्मा, आर ए (2006)"शिक्षा अनुसंधान संस्करण" 2006 प्रकाशन सूची पब्लिकेशन मेरठ। प्रकाशक राधा।
3. शर्मा, आर ए (2006) "उदयीमान भारतीय में अध्यापक प्रकाशन कचहरी घाट, आगरा, पंचम संस्करण।
4. शर्मा, गंगाराम एवं भार्गव विवेक शिक्षा मनोविज्ञान" द्वितीय संस्करण 2005–2006 प्रकाशक एच0 पी0 भार्गव बुक हाउस 41230 कचहरी घाट, आगरा।
5. सारस्वत (1992)"दिल्ली के माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों का पारिवारिक समायोजन मूल्य उपलब्धि समाजिक एवं आर्थिक स्तर पर अध्ययन" (अप्रकाशित)
6. लीकेशन, राइन (1991) "कार्यरत महिलाओं के तनाव के प्रति अभिक्रिया और पारिवारिक समायोजन पर अध्ययन इण्डियन जनरल ऑफ रिसर्च इन साइकोमेट्री एवं एजुकेशन वाल्युम ।
7. सक्सेना, सरोज (1996) "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार तृतीय संस्करण प्रकाशन कचहरी घाट, आगरा ।
8. माधुर, एज 0 एस 0 (2006) "शिक्षा मनो विज्ञान 36 वां संस्करण 2005 प्रकाशन विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. मेनेजेस, एल (1978) "किशोरावस्था में परिवारिक समायोजना की समस्या पर अध्ययन" 'सेकेण्ड सर्वे आफ एजुकेशन (1972–1978).
10. राय, पारसनाथ (2004) "अनुसंधान परिचय" दशम् संकरण लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

*****